(यात्रा-वृत्तांत)

स्वर्ण पगोडा की भूमि-नामसई

दयाराम वर्मा

दिनांक 03 नवंबर, 2022 से 5 नवंबर, 2022 के बीच अरुणाचल के नामसई जिला मुख्यालय पर राष्ट्रीय स्तर के अरुणाचल प्रदेश साहित्य महोत्सव का आयोजन राज्य के 'सूचना एवं जनसंपर्क विभाग' और 'अरुणाचल प्रदेश साहित्यिक समाज' (एपीएलएस) के तत्त्वावधान में रखा गया था। इसमें देश-विदेश के लगभग 100 से अधिक साहित्यकारों को आमंत्रित किया गया, सौभाग्य से उनमें से एक मैं भी था। सभी औपचारिकताओं के बाद दो नवंबर, 2022 को आयोजकों की ओर से मुझे जयपुर से वाया गुवाहाटी डिब्रूगढ़ का हवाई टिकट उपलब्ध करवा दिया गया। नामसई, लोहित जिले के पश्चिमी हिस्से को विभक्त कर 2014 में बनाया गया अरुणाचल प्रदेश का 14वाँ जिला है। 'नोआ दिहिंग ' नदी के समीप बसे इस शहर की सीमाएं उत्तर-पूर्व में 'लोहित', दक्षिण में 'चांगलांग' और पश्चिम में असम राज्य के 'डिब्रूगढ़' जिले से लगती हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 15 से होते हुए, निकटतम हवाई अड्डे डिब्रूगढ़ से नामसई की दूरी करीब 125 किलोमीटर है। इस हवाई अड्डे को मोहनबाड़ी भी कहा जाता है। दो नवंबर, 2022 को विमान ने जब डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे के रनवे को छूआ तो शाम के साढ़े तीन बज चुके थे। डिब्रूगढ़ आने का यह मेरा तीसरा अवसर था। पहली बार इस हवाई अड्डे पर वायु सेना की सेवा के दौरान वर्ष 1988 में जोरहाट से टूटिंग जाते समय और दूसरी बार नवंबर, 2019 में अरुणाचल के भ्रमण से लौटते समय मेरा आना हुआ था। यद्यपि यह एकल पट्टी वाला एक छोटा सा हवाई अड्डा है, लेकिन सुदूर दक्षिण-पूर्व अरुणाचल, पूर्वी असम एवं नागालैंड को शेष भारत से जोड़ने वाला एकमात्र हवाई अड्डा होने के कारण इसका महत्त्व बढ़ जाता है। बाहर आने के बाद मैंने हमारे समन्वयक श्री सावांग वांगछा से बात की। उन्होंने एक ड्राइवर के मोबाइल नंबर दिए। शीघ्र ही सामने की पार्किंग में ड्राइवर से संपर्क हो गया। लगभग 25 डिग्री तापमान, साफ आसमान और शांत हवाओं के चलते मौसम सुहावना था। थोड़ी ही देर में अहमदाबाद, गुजरात से पधारे डॉ. राजेश रठवा और सुंदरनगर, हिमाचल से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गंगाराम राजी भी हमसे आ मिले। ये दोनों भी अरुणाचल लिट-फेस्ट में भाग लेने जा रहे थे। डॉ. राजी के साथ उनकी धर्मपत्नी भी थीं। यहाँ से नामसई का सफ़र लगभग तीन घंटे का था। कुछ और मेहमान भी थे जो दूसरी गाड़ियों में जा रहे थे। शाम के चार बज चुके थे, अत: बिना समय गँवाए, हम आरामदेह इनोवा गाड़ी में रवाना हो लिए।

हवाई अड्डे से निकलने के पंद्रह-बीस मिनिट पश्चात ही ड्राइवर ने एक रेस्टोरेंट पर भोजन के लिए गाड़ी रोकी। हमने भी यहीं पर भोजन कर लेना उचित समझा। रेस्टोरेंट साफ़-सुथरा था और खाना भी संतोषजनक था। अब सूर्य अपनी अंतिम रश्मियों को समेटते हुए पश्चिम में डूबने की तैयारी कर रहा था। जयपुर (राजस्थान) और यहाँ के सूर्यास्त में लगभग डेढ़ घंटे का अंतर था। यह पूरा क्षेत्र मैदानी भाग था-डिब्रूगढ़ से ही चाय के विशाल बागान आरंभ हो जाते हैं जो आगे तक चलते हैं। लेकिन प्रतिपल गहराते अंधकार के कारण दाएँ-बाएँ कुछ भी देख पाना संभव नहीं था। गाड़ी की तेज गति के बावजूद झटके नहीं लग रहे थे, अर्थात राजमार्ग बढ़िया था।

परिचयोपरांत गपियाने-बतियाने का सिलसिला आरंभ हुआ। डॉ. राजेश रठवा, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद में रिसर्च एसोसिएट थे। वरिष्ठ साहित्यकार और कथाकार डॉ. गंगाराम शर्मा 'राजी' ने बताया कि अब तक उनके 27 कहानी संग्रह और 12 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। बीच-बीच में हमारी, श्रीमान सावांग से मोबाइल फोन पर बातचीत हो रही थी जो नामसई में हमारे निर्धारित ठिकानों के बारे में मार्गदर्शन करते जा रहे थे। असम के चबुआ और तिनसुकिया शहर से गुजरते हुए लगभग दो घंटे के पश्चात गाड़ी ने 'काकोपथार' नामक चेक-पोस्ट पर अरुणाचल की सीमा में प्रवेश किया। यहाँ हमारे 'इनर लाइन परमिट' की जाँच की गई। नामसई पहुँचते-पहुँचते स्थानीय समय के अनुसार काफी रात हो चुकी थी। प्राय: सभी दुकानें और बाजार बंद हो चुके थे। सड़क के दोनों ओर दूर-दूर तक समतली जमीन पर अंधकार में डूबे खेत-खलिहान या जंगल थे। डॉ. गंगाराम शर्मा 'राजी' और उनकी धर्मपत्नी को नामसई में उनके लिए आरक्षित होटल में छोड़ने के बाद हम आगे बढ़ गए। समन्वयक श्री सावांग वांगछा के अनुसार हमें 'चौंखम' गाँव के 'ह्वेन ताई होम स्टे' में रूकना था। गूगल नक्शे का अनुसरण करते हुए हम नामसई से करीब अट्ठाईस किलोमीटर और आगे आ गए। लेकिन चौंखम में हमें अपना गंतव्य को ढूंढ़ने में थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा-कारण कि गूगल सही लोकेशन को मैप नहीं कर पा रहा था। इस समय वीरान सड़कों पर कोई मार्गदर्शन करने वाला भी नहीं था। खैर, कभी थोड़ा आगे कभी थोड़ा पीछे चक्कर लगाने के बाद अंत में हम एसबीआई की शाखा के पास पहुँच ही गए, होम स्टे इसके पास ही था। इस समय रात्रि के साढ़े नौ बज चुके थे।

जब हम 'ह्वेन ताई होम स्टे' पहुँचे तो हमने यहाँ की स्वामिनी, लगभग पैंतालीस वर्षीय, गौर वर्ण श्रीमती मुक्ता नामचूम को हमारा इंतजार करते पाया। कई एकड़ में फैले इस फार्म हाउस के पिछले हिस्से में दो मंजिला इमारत थी और शेष में खेती-बाड़ी हो रही थी। छोटे-छोटे चाय बागानों से घिरा यह होम स्टे एक शांत और खूबसूरत फार्म हाउस था। हमें एक बेहद साफ सुथरा और सुविधाजनक कमरा दिया गया। खाने में ताजा सब्जी-दाल-चावल-रोटी के साथ-साथ कुछ एक खामती व्यंजन और मछली आदि परोसे गए। भोजन की गुणवत्ता और स्वाद बिल्कुल घर पर बने भोजन जैसा ही था। बाद में हमें ज्ञात हुआ कि इस क्षेत्र में जगह-जगह लोगों ने अपने घरों या फार्म हाउस में होम स्टे खोल रखे हैं। बाहर से आने वाले पर्यटक होटलों में रूकने की अपेक्षा पेड़-पौधों से घिरे, खुले प्राकृतिक परिवेश वाले इन होम स्टे में ठहरना अधिक पसंद करते हैं।

अगली सुबह नाश्ते के उपरांत आस-पास टहलने के उद्देश्य से हम निकल पड़े। थोड़ा आगे, कुछ फर्लांग की दूरी पर एक पुराना बौद्ध विहार देख हम चौंक उठे। इस विहार में कई छोटे बड़े मंदिर थे, जहाँ विभिन्न मुद्राओं में तथागत की गोल्डन मूर्तियाँ स्थापित थीं। यहाँ के बौद्ध मंदिरों का स्थापत्य, म्यांमार के गोल्डन बौद्ध मंदिरों के सदृश होने के कारण इसे 'सुनहरी पगोडा की धरती' कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। विहार में इस समय कुछ एक मजदूरों के अलावा कोई नहीं था। एक ओर नए भवन का निर्माण कार्य चल रहा था तो वहीं एक नई मूर्ति का भी निर्माण हो रहा था। पीपल के एक विशाल पुराने पेड़ के नीचे टूट कर गिरे पत्तियों के विशाल ढेर इस बात का द्योतक थे कि पगोडा परिसर काफी समय से बंद है। कुल मिलाकर यहाँ सादगी भरी शांति का सम्मोहक वातावरण था।

गाँव की चंद और गलियों में घूमते हुए हमने देखा कि यहाँ के घर एक दूसरे से पर्याप्त दूरी पर-अपेक्षाकृत खुले परिवेश में बने हैं। घरों के एक हिस्से में या आस-पास चाय के छोटे बागान भी थे। अधिकांश घर सीमेंट-

कंकरीट से निर्मित पक्के बंगले-नुमा घर हैं। घरों की बालकनी, बरामदे और छत आदि पर लकड़ी की आकर्षक रेलिंग एवं कलात्मक आकृतियाँ, केन के सुंदर फर्नीचर, रंग-बिरंगे सजावटी पेड़ पौधे, यहाँ रहने वालों के बेहतरीन सौंदर्य बोध को अभिव्यक्त कर रहे थे। घरों के बगीचों के बीच पारंपरिक लकड़ी और घास-फूस की झोपड़ियाँ, मछली पालन के छोटे तालाब, मुर्गियों के झुंड, सुस्ताते कुत्ते आदि भी प्राय: सभी जगह देखने को मिल रहे थे। लगभग 9 बजे हमने स्टे होम में नाश्ता किया और साहित्य महोत्सव में भाग लेने के लिए नामसई की ओर रवाना हो लिए।

चौथे अरुणाचल लिट-फेस्ट का शुभारंभ अरुणाचल प्रदेश के उप मुख्य मुख्यमंत्री श्री चाउना मेन के मुख्य आतिथ्य में, अरुणाचल प्रदेश साहित्यिक समाज के अध्यक्ष और वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री येशे दोरजी थोंग्ची, ख्यातिलब्ध लेखिका पद्मश्री ममंग दई आदि की गरिमामयी उपस्थिति में नामसई के बहुउद्देशीय सांस्कृतिक हॉल में हुआ। न केवल हिंदी और अंग्रेजी बल्कि भारत की विभिन्न स्थानीय भाषाओं जैसे मणिपुरी, असमी, भोजपुरी, गुजराती, बंगाली और दक्षिण भारतीय भाषाओं की रचनाओं की प्रस्तुति के कारण यह महोत्सव हमारे देश की 'विविधता में एकता' को मजबूती प्रदान कर रहा था। सम्मेलन में जिन प्रमुख साहित्यकारों, रंगकर्मियों, कलाकारों, कवियों, प्रकाशकों और लेखकों ने भाग लिया वे थे- वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री येशे दोरजी थोंग्ची, ख्यातिलब्ध लेखिका पद्मश्री ममंग दई, पद्मश्री गीता धर्मराज, ध्रुव हजारिका, दिविक रमेश, देवेन्द्र मेवाड़ी, सत्य नारायण उर्फ़ अंकल मूसा, डॉ. जमुना बीनी तादर, डॉ. रति सक्सेना, डेविड डविडर, विकास राय देव बर्मन, डॉ. वांग्लिट मोंगचां, रीकेन गोमले, जयन्त माधव बरा, तेनजिन सुंड्यु, डॉ. गंगाराम राजी, मीठेश निर्मोही, धनंजय चौहान, संतोष कुमार भदौरिया, रवि सिंह और संतोष पटेल।

नामसई और चौंखम के बीच टेंगापानी नामक स्थान पर, टेंग नदी के किनारे नामसई का प्रसिद्ध स्वर्ण पगोडा अवस्थित है। आज थोड़ा समय निकालकर मैं और डॉ. रठवा यहाँ पहुँचे। 49 एकड़ में फैले इस स्वर्ण पगोडा को वर्ष 2010 में आम जनता के लिए खोला गया। स्थानीय भाषा में इसे 'कोंगमु खाम' कहा जाता है। 'विश्व त्रिपिका फाउंडेशन' इस स्वर्ण पगोडा को भारत में पहले अंतरराष्ट्रीय त्रिपिटक केंद्र के रूप में विकसित कर रहा है।

इसमें बौद्ध विहार के अलावा बुद्ध के अनेक मंदिर बनाए गए हैं। सभी एक से बढ़कर एक खूबसूरत, विशाल और भव्य हैं। प्रार्थना सभागार में पूरी तरह केन से बनी एक मूर्ति तो विश्व में महात्मा बुद्ध की सबसे विशाल केन की मूर्ति बताई जाती है। इस पगोडा के लिए बुद्ध की एक विशाल विशुद्ध कांस्य मूर्ति थाईलैंड के भिक्षु क्लाट अरांजिकावास ने दान में दी। यहाँ का सारा निर्माण म्यांमार या थाईलैंड के कारीगरों द्वारा किया गया है। इस परिसर में एक पुस्तकालय, एक क्लिनिक और लगभग 100 भिक्षुओं के लिए छात्रावास आदि की भी उत्तम व्यवस्था है।

एक विशेष बात जो हमें यहाँ आकर ज्ञात हुई वह यह कि ताई-खाम्पति की अपनी एक लिपि भी है, जिसे 'लिक ताई' के नाम से जाना जाता है। यह लिपि म्यांमार की शान (ताई) लिपि से उत्पन्न हुई है। यह एक ताई भाषा है, जिसका थाई और लाओ से गहरा संबंध है। भाषा, लिपि, रीति-रिवाज और संस्कृतियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर सदैव आदान-प्रदान होता रहा है। तथापि, लचीलेपन, व्यावहारिकता, व्यापार एवं सरलता आदि के पैमानों पर जो भाषा, लिपि, रीति-रिवाज या संस्कृति अधिक प्रचलन में आती है वह फलती

फूलती रहती है। हरे भरे विशाल पेड़ों और सुंदर बगीचों के बीच बने इस पगोडा में असीम आध्यात्मिक शांति का अनुभव किया जा सकता है।

अगले दो दिन, सुबह के नाश्ते और शाम के भोजन के समय श्रीमती मुक्ता नामचूम रसोईघर में अपनी एक सहयोगिनी के साथ उपस्थित रहतीं और हमारी जरूरत की हर छोटी-बड़ी चीज का ख्याल रखतीं। उनकी सादगी भरी मेहमान-नवाज़ी क़ाबिल-ए-तारीफ़ थी।

उधर, लिट-फेस्ट में विभिन्न सत्रों में कथा वाचन, काव्य पाठ, लेखकों से भेंट, पुस्तक प्रदर्शनी, पुस्तक परिचर्चा, उपन्यास और कविता लेखन पर कार्यशाला, साहित्य की एक कला के रूप में रंगमंच आदि विविध विषयों पर बुद्धिजीवियों के बीच सार्थक परिचर्चाएं हो रही थीं। 'ट्रांसजेंडर' को समर्पित एक सत्र 'रेनबो कोन्क्लेव' इस समारोह का एक अनूठा आयोजन था, जिसमें 'ट्रांसजेंडर' समुदाय के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी अस्वीकृति, अपमान, उपेक्षा आदि के दर्द को बखूबी बयान किया। प्राय: सभी सत्रों में बड़ी संख्या में स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। प्रतिदिन रात्रि भोज के साथ-साथ, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी उम्र के साहित्यकारों को बिंदास नाचते गाते झूमते देखना और उनका हिस्सा बनना अविस्मरणीय था।

चार नवंबर की रात को 'ह्वेन ताई होम स्टे' में गुवाहाटी की श्रीमती रूमी लश्कर बोरा और इलाहाबाद की डॉ. शमेनाज बानो भी आ पहुँची, लेकिन डॉ. शमेनाज शेख और डॉ. राजेश रठवा अगली सुबह ही चेक आउट कर चले गए। उस रोज मुक्ता नामचूम के भोजन कक्ष में सुबह के नाश्ते के उपरांत बातचीत के दौरान रूमी बोरा ने बताया कि यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर 7-केएम नामक एक रिसोर्ट में साहित्य अकादमी कलकत्ता के क्षेत्रीय सचिव श्री देवेंद्र कुमार देवेश, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर की सहायक प्राध्यापक डॉ. आरती पाठक और जशपुर, छत्तीसगढ़ से सहायक प्राध्यापक श्रीमती कुसुममाधुरी टोप्पो ठहरे हुए हैं और आज उनका परशुराम कुंड देखने का कार्यक्रम है। ड्राइवर सहित दो गाड़ियों की व्यवस्था थी, अत: मैं भी उनके काफिले में शामिल हो गया। मुझे और श्रीमती बोरा को लेकर ड्राइवर 7-केएम रिसोर्ट पहुँचा। यहाँ शेष लोग हमारा इंतजार कर रहे थे।

7-केएम रिसोर्ट चौंखम गाँव से कुछ एक किलोमीटर की दूरी पर ही था। स्वच्छ-पारदर्शी नील-वर्ण पानी की एक छोटी नदी के पास कई एकड़ में फैले इस रिसोर्ट की सुंदरता देखने लायक थी। एक तरफ, लकड़ी, घास-फूस और बाँस के अनेक कॉटेज नजर आ रहे थे। नदी पर बने सुंदर लकड़ी के पुल के उस पार रिसोर्ट था। नदी किनारे लगभग आठ से दस बाँस से कलात्मक झोपड़े थे। प्रत्येक झोपड़े के आगे ढलान में, नदी के पानी को छूती हुई बांस की चटाइयाँ बिछी थीं। पानी इतना पारदर्शी था कि तलहटी में तैरती छोटी-छोटी सैकड़ों मछलियाँ और लुढ़कते हुए कंकपड़-पत्थर तक एकदम साफ नजर आ रहे थे।

इस समय आसमान में काफी ऊँचाई पर छितराए बादल तैर रहे थे। रिसोर्ट के पीछे लंबे-चौड़े मैदानों के अंत में दूर कहीं नीली चुनरिया ओढ़े मिश्मी पहाड़ियों की लंबी श्रृंखला थी। आस-पास के खेतों में चाय और अन्य फसलें लहलहा रही थीं। पंद्रह से बीस सैलानी भी इधर-उधर मौज मस्ती में व्यस्त थे। रिसोर्ट के भोजन कक्ष, स्वागत कक्ष और अन्य सभी प्रकार के ढांचों का निर्माण सौ फ़ीसद बाँस, केन, घास-फूस आदि द्वारा

अत्यंत आकर्षक डिज़ाइन में किया गया था। यहाँ कई तरह के मनोरंजक इनडोर खेल-कूद की भी व्यवस्था थी। कुछ लोग नदी में स्नान का आनंद ले रहे थे।

नदी के समीप एक प्लेटफॉर्म पर सजी पंक्तिबद्ध आराम कुर्सियों पर पसर कर हमने भी अल्प काल के लिए प्रकृति के सान्निध्य में कल-कल बहते पानी के संगीत का आनंद लिया। मंथर गति से बह रहे पानी की गहराई अधिकतम कमर तक ही थी; अतएव यहाँ स्नान करने में किसी प्रकार का खतरा नहीं था। भारत में इतनी स्वच्छ एवं पारदर्शी नदियाँ दुर्लभ ही हैं। वर्ष 1988-89 में जब मैं ऊपरी सियांग जिले के टूटिंग कस्बे में था तब सियांग का पानी इसी प्रकार साफ, पारदर्शी और नील-वर्ण हुआ करता था। लेकिन, जब तीस वर्ष बाद, वर्ष 2019 में मेरा पुन: उस क्षेत्र में जाना हुआ तो गेल्लिंग से लेकर पासीघाट तक सर्वत्र सियांग के जल को काला और मटमैला पाया।

हमने थोड़ी देर रूककर इस रिसोर्ट के प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठाया और फिर आगे के लिए निकल पड़े। एक गाड़ी में मैं, देवेंद्र देवेश और रूमी बोरा थीं और दूसरी गाड़ी में डॉ. आरती पाठक, डॉ. कुसुममाधुरी टोप्पो उनकी बेटी और पति देव थे।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 पर अवस्थित परशुराम कुंड की रिसोर्ट से लगभग 77 किलोमीटर की दूरी थी। इस राजमार्ग का रख रखाव अच्छा नहीं था। जगह-जगह से टूटी-फूटी होने के कारण खूब झटके लग रहे थे। सड़क के दोनों ओर मैदानी भू-भाग पर दूर-दूर तक चाय और धान के खेत लहलहा रहे थे। जहाँ-तहाँ पीठ पर टोकरी लटकाए, सर पर बड़े गोल केन वाले टोप ओढ़े, औरतें और आदमी खेतों में काम करते नजर आ रहे थे। आगे चलकर जब हमने मेडो चाय बागान और मेडो गाँव को पार किया तो पहाड़ी क्षेत्र आरंभ हो गया। कुंड की ओर जाने वाला मार्ग, मुख्य सड़क से 90 डिग्री का कोण बनाते हुए एक पहाड़ी चढ़ाई वाला रास्ता था। अब हम कामलांग आरक्षित वन क्षेत्र से गुजर रहे थे। यहाँ ऊँचाई वाले पेड़ों, जंगली पौधों और सघन लताओं का साम्राज्य था। रास्ते में हमने अनेक सूखे नालों को भी पार किया। इस क्षेत्र में सूखे नालों की उपस्थिति असमान्य बात थी, क्योंकि जहाँ तक मेरी जानकारी थी हिमालयन नदी-नालों में वर्ष पर्यंत पानी बहता रहता है।

अरुणाचल व असम में 200 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद लोहित नदी ब्रह्मपुत्र में समाहित होती है। इसका उद्गम तिब्बत (वर्तमान चीन) की तिरप-फासी पर्वत श्रृंखला है। यह दोनों देशों की सीमा पर 'किबिथो' नामक छोटे से गाँव के पास से गुजरते हुए भारत की सीमा में प्रवेश करती है। वहाँ से यह मिश्मी पहाड़ी के दर्रों को पार करती हुई लोहित जिले के मैदानी भाग में पहुंचती है। लोहित के ऊपरी इलाकों में मिश्मी जनजाति का बाहुल्य है तो इसके निचले या मैदानी भागों में खम्पति और सिंगफोस का।

लोहित जिले में जहाँ मिश्मी पहाड़ियाँ आरंभ होती है, वहीं विशुद्ध जल से लबरेज़ लोहित नदी भी पहाड़ियों से उतरकर अपना मैदानी सफ़र शुरू करती है। यही जगह है- परशुराम कुंड। पौराणिक कथाओं के अनुसार परशुराम को विष्णु भगवान के दश अवतारों में से एक माना गया है। कालिका पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार त्रेता युग में ऋषि जमदग्नि की पत्नी रेणुका, एक बार नदी से पानी लेने गई। नदी में एक अत्यंत सुंदर राजकुमार को सुंदर स्त्रियों के साथ स्नान करते देख ऐसी मुग्ध हुई कि समय का ख़याल ही न रहा। रेणुका के आश्रम पहुँचने पर ऋषि जमदग्नि अत्यंत क्रोधित हो उठे और अपने पुत्रों से कहा कि वे रेणुका की हत्या कर दें। ऋषि के बड़े पुत्र यह नहीं कर पाए लेकिन छोटे पुत्र परशुराम ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी

ही माँ की एक कुल्हाड़ी से हत्या कर दी। उसने अपने अन्य भाइयों की भी पिता की आज्ञा न मानने के कारण हत्या कर दी।

जब उसके पिता उससे प्रसन्न हो गए तो परशुराम ने उनसे, अपनी माँ और भाइयों को पुनर्जीवित करने का वर मांग लिया। ऋषि जमदग्नि ने पुत्र परशुराम को वर दे दिया साथ ही यह भी वर दिया कि पुनर्जीवित होने पर उसकी माँ या भाइयों को उनकी हत्या की घटना याद नहीं रहेगी। लेकिन मातृ हत्या के पाप के कारण कुल्हाड़ी का हत्था उसके हाथ से चिपक गया। परशुराम ने उससे छुटकारे का उपाय अपने पिता श्री से पूछा। ऋषि जमदग्नि ने कहा कि वह पवित्र नदियों में जाकर स्नान करे, जब वह पाप मुक्त हो जाएगा तो कुल्हाड़ी का हत्था भी छूट जाएगा।

इसी कारण परशुराम ने विभिन्न पवित्र नदियों में जाकर स्नान करना आरंभ किया और जब लोहित नदी के इस स्थान पर स्नान किया तो उसके हाथ से चिपका हुआ हत्था छूटकर गिर गया। इस प्रकार हिंदु धर्मावलंबियों के बीच, पापों से प्रायश्चित या मुक्ति की कामना के रूप में इस स्थान पर आकर स्नान करना प्रचलन में आया। प्रति वर्ष पौष माह (जनवरी) की मकर संक्रांति के दिन हजारों हिंदु श्रद्धालु यहाँ आकर पवित्र डुबकी लगाते हैं।

कुंड तक पहुँचने के लिए एक पगडंडी-नुमा रास्ता पहाड़ों के बीच से बना हुआ है। सबसे पहले सीमेंट के ऊंचे स्तंभों वाला एक द्वार नजर आया। इस पर लिखा था 'श्री परशुराम धाम कुण्ड 24/08/2010 गाड़ियों से उतरकर हम पैदल ऊपर की ओर चल पड़े। आगे रास्ते में पुराने मंदिर परिसर के पास ही भगवान परशुराम का एक नया मंदिर बना हुआ था। इस मंदिर की 51 फुट की भगवान परशुराम की कांस्य मूर्ति का अनावरण दिनांक 21 मई, 2022 को केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने किया था।

यहाँ दैनिक कामों में व्यस्त पुजारी और कामगार लोग दिखाई पड़ रहे थे। बंदर, लंगूर और गाय-बछड़े आदि भी देखे जा सकते थे। चंद प्रसाद और पूजा सामग्री से सजी-धजी दुकानें थीं। इनको पार करने पर एक घुमावदार रास्ता नजर आया-जहाँ पत्थर काट कर सीढ़ियां बनाई गईं थी। हम इन सीढ़ियों पर नीचे उतरते गए। सैकड़ों सीढ़ियाँ और कई घुमाव पार करने के बाद आखिर में हमें लोहित नदी नजर आई। जहाँ सीढ़ियां समाप्त हो रही थीं वहाँ की चट्टानों से लोहित की प्रचंड लहरें टकरा कर भीषण गर्जना उत्पन्न कर रही थीं। एक ओर पहाड़ के एक हिस्से में परशुराम कुण्ड का पवित्र धाम था। यहाँ एक पुजारी, श्रद्धालुओं को आशीर्वाद और प्रसाद वितरण कर रहे थे।

यद्यपि लोहित सियांग की तरह विशाल नदी नहीं कही जा सकती, लेकिन इस बिंदु पर इसका बहाव काफी तेज था और पाट भी बहुत चौड़ा था। इस पाट के लगभग आधे हिस्से में ही नदी का प्रवाह था। थोड़ी ही दूरी पर नदी के आर-पार एक लंबा पुल भी नजर आ रहा था। चारो ओर पहाड़, हरियाली और स्वच्छ वातावरण तन-मन को अंदर तक प्रफुल्लित कर रहे थे। यहाँ असल परीक्षा वापिस लौटते समय होती है, जब खड़ी चढ़ाई वाली सैकड़ों सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। गाड़ी की पार्किंग तक आते-आते हम सब की टांगे थक कर चूर हो चुकी थीं। यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि जिन व्यक्तियों को घुटने में दर्द रहता है या अधिक उम्र के कारण चढ़ने-उतरने में परेशानी होती है, वे इन पहाड़ी सीढ़ियों पर किसी प्रकार का जोखिम न लें। लौटते समय हमने नदी पर बने पुल से बहुत-सी तस्वीरें लीं और एक रेस्टोरेंट पर रूककर भोजन किया।

रास्ते में चौंखम कस्बे के नजदीक एक पालि विद्यालय का बोर्ड देखकर मैं चौंक उठा। पालि! पालि भाषा का विद्यालय और यहाँ? बाद में इस विषय पर और जानकारी जुटाने पर ज्ञात हुआ कि बौद्ध के धर्मोपदेश (धम्म) मूल रूप से पालि भाषा में ही लिपिबद्ध हुए। म्यांमार और थाईलैंड में भी बौद्ध धर्म का प्रसार-प्रचार, पूर्वोत्तर भारत से ही हुआ। बाद में ताई-खम्पति जो म्यांमार से इधर आए, अपने साथ अपनी भाषा और लिपि को भी लेकर आए। यद्यपि विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में बौद्ध साहित्य का अनुवाद आसानी से उपलब्ध होगा फिर भी इस लुप्तप्राय भाषा के नाम से इस छोटे से गाँव में एक विद्यालय के संचालन को इस भाषा के जरिए यहाँ के लोगों की अपनी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखने के एक प्रयास के रूप में देखा जा सकता है।

इस दौरे के बाद, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, दोईमुख के हिंदी विभाग के सहायक आचार्य श्री राजीव रंजन प्रसाद के सौजन्य से मुझे पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली से वर्ष 2001 में प्रकाशित एक दुर्लभ ग्रंथ 'अरुणाचल प्रदेश का खम्पति समाज और साहित्य' प्राप्त हुआ। इसके रचयिता थे डॉ. भिक्षु कोण्डिन्य। इस पुस्तक में खम्पति समाज के इतिहास, रहन-सहन, भाषा-शैली, साहित्य, धार्मिक अनुष्ठान, बौद्ध परंपरा, रीति-रिवाज, खान-पान व कृषि आदि की अनुभवजन्य बारीक से बारीक जानकारियाँ प्रदान की गई है वह अचंभित करती है। नामसई में खम्पति प्रमुख जनजाति और थेरवादी बुद्धिज्म प्रमुख धर्म है।

आज महोत्सव का अंतिम दिन था। अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसाइटी के महासचिव मुकुल पाठक ने समारोह का विधिवत समापन किया और सभी साहित्यकारों और मेहमानों को माननीय उप मुख्यमंत्री चाउना मेन की ओर से चौंखम के नजदीक के एक गाँव 'मेमे' के 'तुंग ताओ' रिसोर्ट में उसी रोज रात्रि-भोज का न्योता भी दे दिया।

तुंग ताओ रिसोर्ट भी 7-केएम रिसोर्ट की भांति एक छोटी नदी के किनारे स्थित था। रात्रि भोज के साथ स्थानीय गीत-संगीत एवं नृत्य की शानदार व्यवस्था थी। ठंड से निपटने के लिए जगह-जगह अलाव जलाए गए थे। नदी के ऊपर बने लकड़ी के कलात्मक प्लेटफॉर्मों पर सांस्कृतिक आयोजन हो रहे थे। मुख्य अतिथि, साहित्यकारों और अन्य गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में चुनिंदा लेखकों और कलाकारों को पारंपरिक 'थाई सन पैरासोल एशियन छतरी' के साथ सम्मानित भी किया गया। देर रात हम वापिस अपने स्टे होम में लौटे।

अगला दिन घर वापसी का दिन था। नामसई की ढेरों अविस्मरणीय यादें संजोकर हमने हमारी मेजबान श्रीमती मुक्ता वांगचूम से विदा ली और डिब्रूगढ़ हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गए। इस समारोह में एक शख्सियत सूत्रधार की भांति हर समय हर जगह मौजूद थीं। हर व्यक्ति से उनका आत्मिक मेल-मिलाप औपचारिकताओं की सीमा से परे दिलों की सरहदों तक था। इस वृत्तांत के अंत में उस शख्सियत, हर दिल अजीज डॉ. जमुना बीनी तादर का हार्दिक आभार और धन्यवाद।

*(**लेखकीय परिचय:** दयाराम वर्मा अरुणाचल प्रदेश में लंबे समय तक नौकरी के लिए पदस्थापित रहे हैं। आपका उपन्यास 'सियांग के उस पार' और यात्रा-वृत्तांत 'ब्रह्मपुत्र से सांग्पो की यात्रा' पुस्तक काफी चर्चित रही हैं। आप जयपुर स्थित पंजाब नेशनल बैंक से मुख्य प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं तथा इस समय जयपुर में रहते हुए साहित्य लेखन और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में योगदान दे रहे हैं।*
ईमेल- drv.excel@gmail.com)